REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

भारतीय समाज में स्वामी रामतीर्थ के दर्शन का योगदान

रहितेश्वर राय
शोध छात्र , स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग ,
तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर.

प्रस्तावना

स्वामी रामतीर्थ का व्यक्तित्व ऐसा था जो प्रख्यात होते हुए भी अधिक परिचित न हो पाया। वे उच्च शिक्षित प्रोफेसर होते हुए भी आध्यात्मिक क्षेत्र में महामानव के रूप में अवतरित एक संत थे। अल्पायु जीवन काल में ही उनकी जीवन की विलक्षणता और अलौकिकता की झलक मिलती है। 22 अक्टूबर सन् 1873 को दीपावली के दिन स्वामी रामतीर्थ का जन्म पंजाब के गुजराबाला जिले (जो वर्त्तमान में पाकिस्तान में पड़ता है) में एक गोस्वमी गरीब ब्राह्मण के घर में हुआ था। बचपन में ही उनके माता का निधन हो गया था। पिता की आय अत्यंत कम थी। इनके बचपन का नाम तीरथ राम था। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छात्र जीवन में उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

उसके बावजूद उन्होंने अपनी शिक्षा को पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी और अन्ततः वे उच्च शिक्षा के लिए लाहौर गए। उन्होंने गणित में स्नातकोत्तर की डीग्री प्राप्त कर पंजाब विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हुए। उन्हें जो वेतन मिलता था उसका एक बड़ा हिस्सा वे निर्धन छात्रों के अध्ययन में खर्च किया करते थे। उनका जीवन साधारण एवं विचार उच्च थे। वर्ष 1897 उसके जीवन का निर्णायक मोड़ रहा, उन दिनों लाहौर के एक कार्यक्रम में उन्हें स्वामी विवेकानन्द से मिलने का सुनहरा अवसर मिला। स्वामी विवेकानन्द जी के व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित होकर उनका सम्पूर्ण जीवन ही बदल गया। उनमें गणित से अधिक परमेश्वर की धुन सवार हो गई। वे अपनी नौकरी, घर, परिवार छोड़ कर देश की सेवा करना चाहते थे। वे अपना सारा सम्पत्ति साधु-महात्माओं की सेवा में अर्पण कर दिए और एकांत में उपनिषद, रामायण, गीता आदि ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। इसके बाद स्वामी रामतीर्थ जी ने देश-विदेश की यात्रा की और सभी बन्धनों से मुक्त होकर सन्यासी के रूप में घोर तपस्या भी की। वे विदेश और भारत में अनेक स्थानों पर प्रवचन दिये। जिससे भारतीय समाज ने उनको एक सन्त के रूप में स्वागत किया गया।

इस बीच उन्हें नौकरी से भी निकाल दिया गया। नौकरी के छुटने से वे बेहद खुश हुए। क्योंकि अब उन्हें कृष्णभक्ति और आत्मचिंतन के लिए भरपूर वक्त मिलेगा, स्वामी तीर्थराम को विश्वास था कि ''इष्ट की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता। इस सृष्टि में और जो उस प्रभु द्वारा किया जाता है, वह मंगलमय ही होता है। यह बात अलग है कि इसके अनुभव जीव को बाद में हो।''[1] इसके बाद वे अपना अधिकांश समय ईश्वर भक्ति में ही बिताते थे, जब वे ध्यान मग्न होते, तो उन्हें बेहद आनन्द की अनुभूति होती। उनका मानना था कि ''सृष्टि का रचियता ईश्वर है और वह सब जगह विराजमान है, सभी छोटी-बड़ी वस्तुओं में, जीव-जन्तुओं में उसकी शक्ति काम करती है''।[2]

स्वामी रामतीर्थ का प्रधान लक्ष्य था समाज को जागरूक करना। समाज में फैली कुरीतियों से मनुष्यों को परिचय दिलाना। वे अपने अद्‌भुत व्यक्तित्व से जन-जन को आन्दोलित किये एवं देश के प्रति सच्ची सेवा भावना को विकसित करने के लिए जन आन्दोलन किये। उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था कि

नव युवक से लेकर महिलाएँ, पुरूष एवं बुजूर्ग सभी उनसे प्रभावित होने लगे। स्वामी रामतीर्थ की अद्भूत भाषण शैली और मौलिक विचारों का ही प्रभाव था कि भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी उनके वाणी के लोग प्रशंसक बने। 1902 में टिहरी नरेश की विनती पर वे पहली बार जापान में एक धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने गए। जहाँ उन्होंने कई स्थानों पर घूम-घूम कर अपना अपार ज्ञान से भरा भाषण से लोगो के दिलों में समा गऐ। उनके भाषण की चर्चा दूर-दूर तक हुआ और हर जगह स्वामी रामतीर्थ को पहचाना जाने लगा। इसके बाद लगातार अमेरिका में भी मानवीय मूल्यों से ओत प्रोत भाषण देकर अमेरिका वासियों का दिल जीत लिए। फिर यह सिलसिला चलता रहा। वे अमेरिका में कभी वेद, उपनिषद, चरित्र, आत्म-तत्व, आध्यात्मिक, उन्नत्ति जैसे कई विषयों पर व्याख्यान दिए। वे कठिन में कठिन विषयों को अपनी अद्भूत शैली से सरल शब्दों से समझाते थे। जिसके कारण नियमित रूप से लोग उनके शिष्य बनते गए। भारत विश्व गुरू है यह विवेकानन्द जी के बाद स्वामी रामतीर्थ ने सिद्ध कर दिया।

रामतीर्थ ने निम्न वर्ग के लोगों में शिक्षा का प्रसार किया और जातिवादी प्रथा समाप्त करने का अभियान चलाया। समाज को जाति, धर्म और अशिक्षा से मुक्त किया। उनका एक महत्वपूर्ण कथन था कि ''भारत को मिशनरियों की नहीं बल्कि शिक्षित युवाओं की जरूरत है।''[3] वर्तमान समय में चाहे कोई राष्ट्र हो, किन्तु यदि कोई राष्ट्रीय मस्तिष्क भली भांति उन सिद्धांतों को समझता नहीं, तो उस राष्ट्र के पतन की बराबर संभावना बनी रहती है। इसलिए राष्ट्र को फलने-फूलने के लिए राष्ट्रीय मस्तिष्क को भली भांति फलने-फूलने देना होगा तभी राष्ट्र और समाज का विकास होगा। स्वामी रामतीर्थ ने समाज के विकास के लिए कई तरह के सराहनीय योगदान दिये। उनका विचार मनुष्य को वर्तमान और भविष्य में सफलता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुए है। वे कहते हैं कि ''कोई चीज कितनी भी प्यारी क्यों न हो, अगर वह आत्म साक्षात्कार में बाधक हो तो उसे तुरंत हटा देना चाहिए।''[4] उन्होंने अपनी आध्यात्मिक तेज से पूरी दुनिया को अभिभूत कर दिया था। उनके जीवन, साधना-प्रणाली और आदर्श से सम्पूर्ण भारत श्रेयस औऱ प्रेयस दोनों प्राप्त कर सकता है। उनके सादा जीवन और उच्च विचार से हमारे युवाओं को प्रेरणा लेने की जरूरत है। स्वामी रामतीर्थ, निष्काम कर्मयोग, राजयोग, भक्तियोग एवं अद्वैत वेदान्त के सच्चे समर्थक थे। उनके मन में राष्ट्रभक्ति, देशभक्ति और मानव सेवा का विचार कुट-कुट कर भरा हुआ था।

स्वामी रामतीर्थ को शब्दों का जादूगर के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि एक बार वे अमेरिका के सेंनफ्रांसिस्को में गए हुए थे जहाँ उनका संत वानी चल रहा था सभी लोग उनकी बातों को ध्यान से सुन रहे थे तभी एक महिला आयी और स्वामी जी के शरण में पहुँची, जिनका एक ही पुत्र था जो किसी असाध्य बिमारी के कारण कुछ दिन पहले मृत्यु को प्राप्त कर चुका था जिस कारण वह महिला विछिप्त अवस्था की शिकार थी। वह महिला फफक-फफक कर रोने रही थी और स्वामी जी के समक्ष जिद् करने लगी कि मेरे पुत्र को किसी भी तरह वापस ला दे। स्वामी जी ने उनको संभालते हुए एक अनाथालय ले गये और एक बच्चे का हाथ पकड़कर उस महिला से कहा कि आप इनमें अपने बेटे को देखे। इसे अपने बेटे की तरह लाड़-प्यार दे। यह आपका जीवन खुशियों से भर देगा। इन शब्दों का असर इतना गहरा पड़ा कि उन्होंने उस बच्चे को अपने घर ले आई और कुछ ही दिनों में वह अनाथ बच्चा उनके जीवन का सहारा बन गया। वह महिला धर्मपरायण बन गई।

स्वामी रामतीर्थ व्यवहारिक वेदांत के पोषक थे। वे वेदांत को सूत्रों से निकालकर नवीन ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किए। वे अपने जीवन के अनुभव से धर्म एवं समाज के अनसुलझे रहस्यों को स्पष्ट करने का प्रयास किए। वे मनुष्य को स्वयं अपने भाग्य का निर्माता घोषित किए। वे कर्मवाद के द्वारा जीवन में आये उलझनों एवं संघर्षों पर विजय प्राप्त करने की शिक्षा दिए।

भारतीय समाज में स्वामी रामतीर्थ के दर्शन की प्रासंगिकता इस बात से स्पष्ट होती है कि यदि स्वामी रामतीर्थ आज जीवित होते तो भारत में गोदरा कांड, अयोध्या विवाद, सम्प्रदायिकता, जातिवाद जैसे मुद्दे नहीं होते। उनका कहना था कि भारत को मशीनों की नहीं बल्कि शिक्षित युवाओं की जरूरत है। वे विकासवाद के समर्थक थे। उन्होंने बतलाया कि श्रम विभाजन के आधार पर वर्ण व्यवस्था किसी सभ्य समाज के लिए हितकर थी, परन्तु आज यही व्यवस्था समाज को टुकड़ों में बाँट

रही है। इसलिए उनका मानना था कि ''आज देश के सामने एक ही धर्म होना चाहिए-राष्ट्रधर्म।''[5] हमारे देश के नवयुवकों को स्वामी रामतीर्थ के विचारों, उपदेशों एवं शिक्षाओं से बलवती प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

देश भक्ति पर लिखे उनके निबंध ने देश में एक नई वैचारिक क्रांति को जन्म दिया। उनके विचारों में देश-भक्ति, राष्ट्रभक्ति एवं मानव-सेवा की त्रिवेणी प्रवाहित होती थी। मजह संयोग ही था कि 17 अक्टूबर 1906 दीपावली के दिन वे ब्रह्मलीन हो गए। अपने छोटे से जीवनकाल में उन्हें एक महान समाज सुधारक, एक ओजस्वी वक्ता एवं एक श्रेष्ठ लेखक का दर्जा प्राप्त हुआ और वे अपने असाधारण कार्यों से पूरे विश्व में अपने नाम का डंका बजाया।

संदर्भ-सूची :

1. विनोद तिवारी : स्वामी रामतीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, प्रकाशन वर्ष-2013, पृष्ठ संख्या-39
2. वही : पृष्ठ संख्या-27
3. श्री साँवसिया बिहारीलाल बर्मा : विश्वदर्शन बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, प्रकाशन वर्ष-1953, पृष्ठ संख्या-350
4. स्वामी शिवानन्द : जन्म शताब्दी स्मृति ग्रंथ, शिवानन्द प्रकाशन संस्थान, टिहरी, गढ़वाल, वर्ष-1987, पृष्ठ संख्या-467
5. https://hi.wikipedia.org/wiki/स्वामी रामतीर्थ

LBP PUBLICATION